ISSN- 2350-0530
DOI: https://doi.org/10.29121/granthaalayah.v2.i3SE.2014.3643

INTERNATIONAL JOURNAL of RESEARCH –GRANTHAALAYAH
A knowledge Repository
Art

सूर्य किरण और रंग चिकित्सा

डॉ. स्नेहलता व्यास
प्राध्यापक– राजनीतिविज्ञान
बी.एल.पी. शासकीय स्नातकोत्तर महाविद्यालय, महू

सारांश

प्राणियों का सम्पूर्ण शरीर रंगीन है। शरीर के समस्त अवयवों का रंग अलग–अलग है। शरीर की समस्त कोषिकायें भी रंगीन है। शरीर का कोई अंग बीमार होता है तो उसका रासायनिक द्रव्यों के साथ–साथ रंगो का असंतुलन हो जाता है। रंग चिकित्सा उन रंगो को संतुलित कर देती है।

आप ऊर्जा की कमी महसूस करते है आत्मविष्वास में कमी पाते है, सोच स्पष्ट नहीं हो पाती है तो रंग चिकित्सा आपकी सहायता कर सकती है। रंगो का हमारे मन पर मस्तिष्क पर गहरा असर पड़ता है। रंगो की इस ताकत ने उपचार के लिए भी उपयोगी बना दिया है। कई बिमारियाँ है जिनके उपचार के लिए रंगो का इस्तेमाल किया जाता है। इन खूबियों के कारण इसे ''कलर थेरेपी'' यानी रंग चिकित्सा का नाम दिया गया है।

शरीर में जहां भी विजातीय द्रव्य एकचित्र होकर रोग उत्पन्न करता है। रंग चिकित्सा उसे दबाती नहीं अपितु शरीर के बाहर निकल देती है। प्रकृति का यह नियम है कि जो चिकित्सा जितनी स्वाभाविक होगी उतनी ही प्रभावषाली भी होगी और उसकी प्रतिक्रिया भी न्यूनतम होगी।

रंगो का हमारी भावनाओं पर सीधा असर पड़ता है। रंगो की उत्पत्ति का प्राकृतिक स्त्रोत सूर्य है। सूर्य के प्रकाष से विभिन्न प्रकार के रंगो की उत्पत्ति होती है। सूर्य सात रंग ग्रहण करता है। सूर्य की किरणों के सात रंगो द्वारा मानव के अलग–अलग रोगों का उपचार होता है। इसलिए इसे सूर्य चिकित्सा का नाम भी दिया गया है।

महर्षि आचार्य चरक के अनुसार जिस संगति में सभी औषधियाँ एक संग रहती है वह सूर्य किरण और रंग चिकित्सा ही है।

सूर्य किरण और रंग चिकित्सा के माध्यम से औषधि बनाने की विधि एक दम सरल है।

यह चिकित्सा सभी जगह सुलभ और निःषुल्क प्राप्त होती है। इस चिकित्सा से असाधारण से असाधारण रोग भी ठीक किया जा सकते है। इसके लिए रोगी को अपने मनोबल और चिकित्सा पर विष्वास कायम रखना चाहिए।